१९ पोग्गल-अत्ताणुयोगद्दारं

पउमदलगब्भउरं देवं पउमप्पहं णमंसित्ता ।
पोग्गलअत्तणुओअं समासदो वण्णइस्सामो ।।१।।

पद्मपत्रके गर्भके समान गौर वर्णवाले पद्मप्रभ जिनेन्द्रको नमस्कार करके पुद्‌गलात्त अनुयोगद्वारका संक्षेपमें वर्णन करते हैं।

पोग्गल-अत्ते त्ति अणुयोगद्दारे पोग्गलो णिक्खिविदव्वो। तं जहा -- णामपोग्गलो ट्ठवणपोग्गलो दव्वपोग्गलो भावपोग्गलो चेदि चउव्विहो पोग्गलो। णाम-ट्ठवणा-पोग्गला सुगमा। दव्वपोग्गलो (अ-का प्रत्योः 'दव्वपोग्गला' इति पाठः।) आगम-णोआगमदव्वपोग्गलभेदेण दुविहो। आगमपोग्गलो सुगमो। णोआगमपोग्गलो तिविहो जाणुगसरीर-भविय-तव्वदिरित्तं चेदि। जाणुगसरीर-भवियं गदं। तव्वदिरित्तपोग्गलो थप्पो। भावपोग्गलो दुविहो आगम-णोआगमभावपोग्गलभेएण। आगमो सुगमो। णोआगमभावपोग्गलो रूव-रस-गंध-फासादिभेएण अणेयविहो। तत्थ णोआगमतव्वदिरि-त्तदव्वपोग्गले पयदं।

'पुद्‌गलात्त' इस अनुयोगद्वारमें पुद्‌गलका निक्षेप किया जाता है। यथा -- नामपुद्‌गल, स्थापनापुद्‌गल, द्रव्यपुद्‌गल और भावपुद्‌गलके भेदसे पुद्‌गल चार प्रकारका है। इनमें नामपुद्‌गल और स्थापनापुद्‌गल सुगम है। द्रव्यपुद्‌गल आगमद्रव्यपुद्‌गल और नोगामद्रव्यपुद्‌गलके भेदसे दो प्रकारका है। आगमद्रव्यपुद्‌गल सुगम है। नोआगमद्रव्यपुद्‌गल तीन प्रकारका है -- ज्ञायकशरीर, भावी और तद्‌व्यतिरिक्त। इ ाायकशरीर और भावी अवगत है। तद्‌व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यपुद्‌गलको अभी छोड़ते हैं। आगम और नोआगम भावपुद्‌गलके भेदसे भावपुद्‌गल दो प्रकारका है। उनमें आगमभावपुद्‌गल सुगम है। नोआगमभावपुद्‌गल रूप, रस, गन्ध और स्पर्श आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है। उनमें यहाँ तद्‌व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यपुद्‌गल प्रकृत है।

णेगमणयस्स वत्तव्वएण सव्वदव्वं पोग्गलो। आत्तं णाम गृहीतम्। आत्ताः गृहीताः आत्मसात्कृताः पुद्गलाः पुद्गलात्ताः। ते च पुद्गलाः षड्भिः प्रकारैरात्मसात् क्रियन्ते। तं जहा -- गहण्णदो परिणामदो उवभोगदो आहारदो ममत्तीदो परिग्गहादो चेदि। विहासा। तं जहा -- हत्थेण वा पादेण वा जे गहिदा दंडादिपोग्गला ते गहण्णदो अत्ता पोग्गला। मिच्छत्तादिपरिणामेहि जे अप्पणो कदा ते परिणामदो अत्ता पोग्गला। गंध-तंबोलादिया जे उवभोगे अप्पणो कदा ते उवभोगदो अत्ता पोग्गला। असण-पाणादिविहाणेण जे अप्पणो कदा ते आहारदो अत्ता पोग्गला। जे अणुराएण पडिग्गहिया ते ममत्तीदो अत्ता पोग्गला। जे सायत्तो ते परिग्गहादो अत्ता पोग्गला।

नैगम नयके विषय स्वरूपसे सब द्रव्य पुद्गल हैं। आत्त शब्दका अर्थ गृहीत है। अतएव 'आत्ताः पुद्गलाः पुद्गलात्ताः' इस विग्रहके अनुसार यहाँ पुद्गलात्त पदसे आत्मसात् किये गये पुद्गलोंका ग्रहण है। वे पुद्गल छह प्रकारसे आत्मसात् किये जाते हैं। यथा-- ग्रहणसे, परिणामसे, उपभोगसे, आहारसे, ममत्वसे और परिग्रहसे। इनकी विभाषा इस प्रकार है -- जो दण्ड आदि पुद्गल हाथ अथवा पैरसे ग्रहण किये गये हैं वे ग्रहणसे आत्त पुद्गल कहलाते हैं। मिथ्यात्व आदि परिणामोंके द्वारा जो पुद्गल अपने किये गये हैं वे परिणामसे आत्त पुद्गल कहे जाते हैं। जो गन्ध और ताम्बूल आदि पुद्गल उपभोग स्वरूपसे अपने किये गये हैं उन्हें उपभोगसे आत्त पुद्गल समझना चाहिये। भोजन-पान आदिके विधानसे जो पुद्गल अपने किये गये हैं उन्हें आहारसे आत्त पुद्गल कहते हैं। जो पुद्गल अनुरागसे गृहीत होते हैं वे ममत्वसे आत्त पुद्गल हैं। जो आत्माधीन पुद्गल हैं उनका नाम परिग्रहसे आत्त पुद्गल हैं।

अधवा, पोग्गलाणमत्ता रूव-रस-गंध-फासादिलक्खणं सरूवं पोग्गलअत्ता णाम। तेसिं च अणंतभागवड्ढि-असंखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जभागवड्ढि-संखेज्जगुणवड्ढि-असंखेज्जगुणवड्ढि-अणंत-गुणवड्ढि त्ति रूवादीणं छव्विहाओ वड्ढीओ होंति। तासिं परूवणा जहा भावविहाणे कदा

तहा कायव्वा। सट्ठाणस्स वि असंखेज्जलोगमेत्ताणि ट्ठाणाणि होंति। तेसिं पि एवं चेव परूवणा कायव्वा। एवं पोग्गलात्ते (ता प्रतौ 'पोग्गलत्ते' इति पाठः।) त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

अथवा 'अत्त' का अर्थ आत्मा अर्थात् स्वरूप है। अतएव 'पोग्गलाणं अत्ता पोग्गल-अत्ता' इस विग्रहके अनुसार पुद्‌गलात्त (पुद्‌गलात्मा) पदसे पुद्‌गलोंका रूप, रस, गन्ध व स्पर्श आदि रूप लक्षण विवक्षित है। उन रूपादिकोंके अनन्तभागवृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि, संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि और अनन्तगुणवृद्धि ये छह वृद्धियाँ होती हैं। उनकी प्ररूपणा जैसे भावविधानमें की गयी है वैसे करना चाहिये। स्वस्थानके भी असंख्यात लोक मात्र होते हैं। उनकी भी इसी प्रकारसे प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार पुद्‌गलात्त यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।

* * * * *